मरियम का प्रेत

अन्तिम युग के लिए एक दैवीय प्रकाशन या फिर एक बड़ा धोखा ?

इन दिनों हज़ारों लोग फातिमा (पुर्तगाल) की यात्रा कर रहे हैं, जहाँ एक आकृति जिसे "कुंवारी मरियम" नाम दिया गया है, स्वयं को प्रकट करती है. इस आकृति ने अपने आप को संसार के अलग-अलग भागों में प्रकट किया है. लोग इस आकृति से प्रार्थना करते हैं और कभी-कभी ''मरियम'' अपने आराधकों को विशेष सन्देश देते हुए उनसे बातें भी करती है.

''मरियम'' स्वयं को परमेश्वर के शेष लोगों की कलीसिया को विशेष मार्ग दर्शन देने के लिए प्रभु की ओर से भेजी गयी अन्तिम समय की नबिया कहती है. इसके अतिरिक्त वह हमारी मध्यस्थ के रूप में हमारी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के समक्ष पहुँचाने का दावा भी करती है. इसलिए खास तौर से कैथोलिक लोगों में वह परमेश्वर और मनुष्य के मध्य एक मध्यस्थ के रूप में स्वीकार की जाती है.

''मरियम'' आगे कहती है कि प्रथ्वी पर बड़ा संकट और दण्ड आयेगा. कठिन समय के लिए वह अपने अनुयाईयों से रक्षा करने वाली उसकी देखभाल में शरण लेने का आग्रह करती है. ''यह ऐसा पल होगा जिसमें सब लोग मुझमें शरण पायेंगे'', वह कहती है ''क्योंकि मैं नई वाचा का जहाज़ हूँ.''

वह भविष्य सम्बंधी सन्देश देती है और भविष्यवाणी भी करती है और हमसे कहती है कि हम उसकी सलाह मानें. वह कहती है, ''मैं मुहर बन्द पुस्तक तुम्हारे लिए खोलती हूँ कि इस पुस्तक में पाये जाने वाले भेद प्रकट किये जायें.''

क्या हम उसके असर से बच सकेंगे ?

''मरियम'' की बातें तो वास्तव में आश्चर्यचकित करने वाली हैं. लेकिन इन प्रकाशनों का सामना होने पर हम कहाँ पाये जायेंगे? क्या यह सन्देश वास्तव में वही सन्देश है जो कि परमेश्वर अन्तिम युग के लोगों को देना चाहता है या फिर सत्य के स्थान पर झूठ का पुलिन्दा है ?

चूंकि हम यहाँ पर उन प्रकाशनों की बात कर रहे हैं जो दावे के साथ परमेश्वर की ओर से बताये जा रहे हैं, तो आइए अपनी बाइबल खोल कर इन प्रकाशनों की परख करें. सत्य और झूठ को परखने के लिए निश्चय ही बाइबल में स्पष्ट मार्गदर्शन है. बाइबल स्पष्टता से कहती है कि अन्तिम समय में सच्चे और झूठे दोनों ही प्रकार के भविष्यद्धकता होंगे. बाइबल यह भी कहती है कि सही और गलत की पहचान केवल '' व्यवस्था और चितौनी'' के द्धारा ही हो सकती है. यशायाह 8:20. "उनके फलों से तुम उन्हें पहिचान लोगे'' मत्ती 7:15-17. बाइबल चेतावनी देते हुए कहती है कि '' प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं."1 यूहन्ना 4:1. दो मुख्य बातें हैं जिन्हें हम परमेश्वर के वचन को सामने रखते हुए जाँच करेंगे.

1. क्या प्रकट होने वाली यह आकृति यीशु की माँ मरियम ही है ? क्या कुंवारी मरियम जीवित है या मृतक है ?
2. उसका संदेश परमेश्वर के वचन के अनुसार है कि नहीं ?

कुंवारी मरियम स्वर्ग में जीवित है या क़ब्र में मृतक है ?

आइए पहिले प्रश्न का उत्तर तलाश करें; मृत्यु के बाद मृतक कहाँ जाता है? आइए देखें कि बाइबल मृतकों के विषय में क्या कहती है? हम धर्मशास्त्र से संक्षेप में कुछ पद देखेंगे. ''क्योंकि जीविते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगें, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है. उनका प्रेम, और उनका बैर और उनकी डाह नष्ट हो चुकी है. अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिए उनका और कोई भाग न होगा. जो काम मुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अधोलोक में जहाँ तू जाने वाला है न तो काम, न तो युक्ति, न ज्ञान और न बुद्धि है. (सभोपदेशक 9:5-6, 10).

''तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर, क्योंकि उसमें उद्धार करने की भी शक्ति नहीं. उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जायेगा. उसी दिन उसकी सब कल्पनाऐं नष्ट हो जायेंगी.'' भजन संहिता 146:3-4.

''मृतक जितने चुप चाप पड़े हैं, वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते, परन्तु हम लोग यहोवा को अब से लेकर सर्वदा तक धन्य करते रहेंगे, याह की स्तुति करो'' भजन संहिता 115:17-18.

और भी अनेक पद हैं, परन्तु बाइबल ने यह तथ्य स्पष्ट कर दिया है कि मरने पर मनुष्य स्वर्ग या नर्क में नहीं जाता बल्कि अपनी क़ब्र में रहते हुए धीरे धीरे पुनः मिट्टी में मिल जाता है. मरियम भी मानव शरीर में थी और उसके साथ भी वही हुआ था, ''मृतक यहोवा की स्तुति नहीं करते''...

पहली बात यह है कि पुनरूत्थान होने पर जो कि बाइबल के अनुसार यीशु मसीह के पुनः आगमन के समय ही होगा, जो विश्वास योग्यता से प्रभु के पीछे चलते हुए मरे थे अनन्त जीवन पाने के लिए अपनी अपनी क़ब्रों से जिलाये जायेंगे. बाइबल इसे इस प्रकार से कहती है :

क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा. उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे, तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें. और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे''. 1 थिस्सलुनीकियों 4:15–17, 1 कुरिन्थियों 15:52–58, प्रकाशितवाक्य 1:7, यूहन्ना 14:1–3.

प्रेतवाद

इस सत्य के प्रकाश में बाइबल सख्ती के साथ ऐसी आकृतियों के मनुष्य रूप में प्रकट होने के विषय चेतावनी देती है जो मर चुके हैं. इस प्रकार के प्रकाशनों को हम प्रेतवाद अर्थात आत्मा की अमरता की शिक्षा कहते हैं. बाइबल हमें यह सलाह देती है : "तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम कर के चढ़ाने वाला, या भावी कहने वाला, या शुभ अशुभ मुहूर्तों का मानने वाला, या टोन्हा, या तांत्रिक या बाजीगर या ओझा से पूछने वाला, या भूत साधने वाला या भूतों को जगाने वाला हो, क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे सामने से निकालने पर है". व्यवस्थाविवरण 18:10–12, 1 शमूएल 28:3–20.

बाइबल में हमें एक उदाहरण भी मिलता है जिसमें दुष्ट शैतान स्वयं को एक मृतक मनुष्य के रूप में प्रकट करता है. हम उस समय के विषय सोच रहे हैं जब इसराईल का राजा शाऊल पलिश्तियों के साथ युद्ध कर रहा था. उसने परमेश्वर को त्याग दिया था इसलिए परमेश्वर ने उसे किसी भी प्रकार से सन्देश देना बंद कर दिया था. वह युद्ध का परिणाम जानने के लिए रात्रि के समय भूत सिद्ध करने वाली एक स्त्री के पास भेष बदल कर गया. शाऊल जानता था कि भूत सिद्ध करने वाली स्त्रियों के पास जाना गलत था लेकिन वह हताशा में था और पश्चाताप कर के परमेश्वर को खोजने के बजाय वह उस स्त्री के घर जा पहुँचा. उस स्त्री की आज्ञानुसार दुष्ट शैतान, शमूएल नबी के रूप में प्रकट हो गया. शमूएल नबी इस घटना से कई वर्ष पूर्व ही मर चुका था. शमूएल के समान दिखाई देने वाली यह आकृति तब युद्ध से सम्बधित सन्देश लेकर उपस्थिति हो गयी. 1 शमूएल 28:3–20

इसी प्रकार से यह दुष्ट शैतान आज भी स्वयं को मृतक मनुष्यों के रूप में प्रकट करता है, वास्तव में यह तो शैतान और उसके दुष्ट दूत हैं जो ''मरियम'' के रूप में प्रकट होकर सत्य से इतना अधिक मिलता जुलता सन्देश देते हैं जिसे केवल वे ही लोग समझ सकते हैं जिनमें पवित्र आत्मा है और जो पवित्र शास्त्र बाइबल को भली भांति जानते हैं. वे ही यह समझ पायेंगे कि सन्देश सही है या गलत.

पवित्र शास्त्र कहता है कि अन्तिम समय में शैतान झूठी तत्परता के साथ काम करेगा, ''सब प्रकार की बड़ी सामर्थ और चिन्ह और अद्भुत् काम के साथ'' 2 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 कुरिन्थियों 11:13–15; मत्ती 24:23–27. इस प्रकार आने वाले समय में हम और भी अधिक मात्रा में ''मरियम के प्रेतों'' का सामना कर सकते हैं. दुर्भाग्य की बात यह है कि बहुत बड़ी संख्या में लोग इन शैतानी प्रकाशनों द्धारा बहकाये जा रहे हैं. (और भविष्य मेंऔर अधिक संख्या में बहकाये जा सकते हैं.) भरमाने वाले इस बड़े धोखे से बचने के लिए हमारे पास केवल एक ही सुरक्षा है और वह है स्वर्गीय पिता के साथ हमारा अटूट सम्बन्ध और परमेश्वर के वचन का गहन ज्ञान.

सबसे बड़ा धोखा

शैतान स्वयं ही बाइबल का परिश्रमी विधार्थी है और ऐसी बातें खोजता है जिनके द्धारा वह विश्वासियों को सत्य से अलग कर सके. शैतान अन्तिम समय में भविष्यवाणियों में वर्णित बातों की नकल करेगा. बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है, ''शैतान आप ही ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है.'' और, "झूठे भविष्यद्धकता उठ खड़े होंगे.'' 2 कुरिन्थियों 11 : 13–15; मत्ती 24:23–27. शैतान भली भांति जानता है कि यीशु पुनः आयेगा, और इस प्रकार अभी शैतान ''मरियम'' के भेष में आकर झूठे चिन्ह और चमत्कार दिखाता है, यही शैतान यीशु के पुनः आगमन की नकल करेगा. यह धोखा बहुत ही बड़ा धोखा होगा. धोखेबाज शैतान यह दिखायेगा जैसे कि मसीह पुनः इस पृथ्वी पर आ गया है ''पृथ्वी के अनेक भागों में शैतान स्वयं को शाही अन्दाज़ में बड़ी शान के साथ परमेश्वर के पुत्र के रूप में, जैसा कि यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 7 में बताया है, प्रकट करेगा, वह इतनी अधिक महिमा में प्रकट होगा जितनी आज तक किसी ने कभी नहीं देखी होगी. हवा में तुरही की आवाज़ें सुनाई देंगी, ''मसीह आ गया है'';''मसीह आ गया है''.

लोग बड़े आदर और सम्मान के साथ उसको दण्डवत करेंगे जब कि वह अपने हाथ उठाकर उनके लिए इस प्रकार आशीष वचन बोलेगा जैसे कि मसीह ने अपने चेलों को अशीष दी थी, जब वह इस पृथ्वी पर था. उसकी आवाज़ कोमल और वशीभूत करने वाली किन्तु अत्यन्त मधुर होगी. नम्रता और तरस से भरी आवाज़ में वह अनुग्रह पूर्ण स्वर्गीय सच्चाइयों को पेश करेगा जिनका कभी स्वयं उद्धारकर्ता ने भी उच्चारण किया था. वह लोगों की बीमारियाँ ठीक करेगा और फिर मसीह के ढोंगी भेष में रहते हुए दावा करेगा कि उसने सब्बत को रविवार में बदल दिया है और लोगों को आदेश देगा कि रविवार को पवित्र मानें क्योंकि उसने रविवार को जी उठने के द्धारा आशीष दी और पवित्र ठहराया है. वह यह घोषणा करेगा कि जो लोगा अभी भी सातवें दिन को पवित्र मानने पर अड़े हैं वे उसके द्धारा भेजे गये स्वर्गदूतों के सन्देशों को अनसुना करके उसके नाम की निन्दा कर रहे हैं.

यह धोखा बहुत शक्तिशाली और पूर्णतया आधीन करने वाला धोखा होगा जैसे शमौन टोनहे ने अपने जादू टोने से सामरियों को भरमाया था कि एक बड़ी भीड़ छोटे से लेकर बड़े तक सब उसकी जादू टोने की बातों पर ध्यान देकर कहते थे, "यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है जो महान कहलाती है.'' प्रेरितों के काम 8:10. प्रकाशितवाक्य 13:13+15; 14:9–11. किन्तु परमेश्वर के लोग धोखा नहीं खायेंगे. इस झूठे मसीह की शिक्षाऐं पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं से पूरी तरह मेल नहीं खायेंगी. वह उन्हें अर्शीषित करेगा जो पशु और उसकी मूरत की पूजा करते और परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते हैं. ये वे लोग होंगे जिन पर बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार परमेश्वर का निरा क्रोध उंडेला जायेगा. और इसके अतिरिक्त शैतान को मसीह के आगमन की नकल करने की अनुमति नहीं होगी. उद्धारकर्ता प्रभु ने अपने लोगों को इस विषय में सावधान रहने की पहले ही चेतावनी दी है और बहुत स्पष्ट बताया है कि मसीह का आगमन किस प्रकार से होगा. ''क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्धकता उठ खड़े होंगे और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखायेंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें..... इसलिए यदि वे तुमसे

कहें, ''देखो, वह जंगल में है" तो बाहर न निकल जाना, "देखो वह कोठरियों में है", तो प्रतीति न करना. क्योंकि जैसे बिजली पूरब से निकल पश्चिम तक चमकती है, वेसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा''. मत्ती 24:23–27. मसीह के इस प्रकार के आगमन की नकल करना शैतान के अधिकार क्षेत्र से बाहर है. मसीह के आगमन को पूरा विश्व जानेगा और पूरा संसार उसे अपनी आँखों से देखेगा. केवल वे जो बाइबल के परिश्रमी विद्यार्थी रहे हैं और जिन्होंने सत्य का प्रेम स्वीकार किया है वे ही इस शक्तिशाली धोखे से बच सकेंगे जो पूरे संसार को अधीन कर लेगा. बाइबल की चेतावनी द्धारा ये उसको पहिचान लेंगे जो भेष बदलकर भरमाने वाला धोखेबाज है. सभी पर परीक्षा की घड़ी आयेगी. इस परिक्षा के द्धारा वास्तविक मसीही प्रकट हो जायेंगे. क्या परमेश्वर के लोग परमेश्वर के वचन पर अभी इतनी दृढ़ता से स्थिर हैं कि वे अपनी इंन्द्रियों की साक्षी से भ्रमित नहीं हो सकें ? क्या वे ऐसे संकटमय समय में केवल और केवल बाइबल की शिक्षा को ही पकड़े रहेंगे? यदि संभव हुआ तो शैतान उन्हें ऐसी घड़ी के लिए तैयार होने से रोकने का प्रयास करेगा. वह परिस्थितियों को इस प्रकार व्यवस्थित करेगा कि उनका मार्ग अवरूद्ध हो जाये. शैतान उन्हें धन के लालच में फंसा देगा या संसार की चिंताओं का बोझ उठाने में इतना अधिक उलझा देगा कि उनके हृदय सुस्त हो जायेंगे और वह दिन उन पर एक चोर के समान आ पड़ेगा.'' (यह रूचिकर भाग ''द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी'' नामक पुस्तक से लिया गया है. इसकी सूचना पर्चे के अन्त में दी गई है. यह पुस्तक मुफ्त प्राप्त करके इस बड़े संकट के विषय में अधिक जानने हेतु अवश्य पढ़िये).

इस धोखे से बचने के लिए हमे अत्यंत जागरूक होने की आवश्यकता है. बाइबल कहती है कि ''यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दे'' इसीलिए हम संकट के इस समय पर अधिक ज़ोर देना चाहते हैं कि इस विषय में स्पष्ट जानकारी हो जिससे हम शैतान के धोखे से बच सकें. जब यीशु मसीह शीघ्र ही पुनः अपने लोगों को लेने आयेगा तो वह अपने पैर इस प्रथ्वी पर नहीं रखेगा, हम पढ़ चुके हैं कि उद्धार पाये हुए लोग यीशु के साथ स्वर्ग जाने के लिए हवा में उठा लिये जायेंगे. 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–18. स्वर्ग पर उठाये जाने से पूर्व यीशु ने कहा ''और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं तो आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो.'' यूहन्ना 14:3. जब उद्धार प्राप्त लोग स्वर्ग में एक हज़ार वर्ष बिता चुके होंगे उसके बाद यीशु पवित्र लोगों के साथ और नये यरूश्लेम के साथ आयेगा, तभी इस पृथ्वी पर पैर रखेगा. उस समय यीशु अपना पाँव जैतून पहाड़ पर रखेगा. वहाँ नया यरूश्लेम स्थापित किया जायेगा तभी यीशु ''एक नये स्वर्ग और एक नयी पृथ्वी'' का निमार्ण करेगा जिसमें धार्मिकता वास करेगी. ज़कर्याह 14:4–9, प्रकाशितवाक्य 20 और 21 अध्याय.

परमेश्वर की मुहर या पशु की छाप

''मरियम'' की शिक्षाओं में काफी सच्चाई है. किन्तु यह सच्चाई प्रायः झूठ के साथ मिली हुई है जिस से पूरी बात को समझना काफी कठिन है. उसके उपदेशों की सब सच्चाई के साथ उसका महिमामय प्रकटीकरण और उसका खास प्रभाव लोगों में विश्वास पैदा करता है. इसमें संदेह नहीं कि शैतान इस विश्वास का लाभ उठा कर और भी ऐसे ही कैथोलिक सिद्धांतों को जन सामान्य के सामने लेकर आयेगा. इन सिद्धांतों में से एक सिद्धांत जो कैथोलिक चर्च की खास पहिचान है और जिसके विषय में पोप ने अपने खास पत्र ''डाईज़ डॉमिनी'' 31 मई 1998 में उल्लेख किया है–वह है सब्बत दिन के स्थान पर रविवार को विश्राम दिन मानना जबकि बाइबल सब्बत सातवें दिन को मानने की आज्ञा देती है.

सभी को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि पोपियत ने ही परमेश्वर की दस आज्ञाओं को (अपने कैटाकिज़्म में) इस प्रकार बदल दिया है कि वे निर्गमन 20:3–17 में लिखित आज्ञाओं से काफी हद तक मेल नहीं खाती हैं. बाइबल कहती है कि हम सातवें दिन को पवित्र मानें जो कि विश्राम दिन है. बाइबल यह भी कहती है कि परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया है. कैटाकिज़्म ने केवल यह कहा गया है कि,''सब्बत दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना.'' परन्तु वे कहते हैं कि कलीसिया ने सब्बत की पवित्रता को सातवें दिन से सप्ताह के पहले दिन पर स्थानांतरित कर दिया है और सप्ताह का पहला दिन रविवार है – "डॉक्ट्रिनल कैटाकिज़्म" पृष्ठ 147 और "द कन्वर्ट्स कैटाकिज़्म ऑफ कैथोलिक डॉक्ट्रिन" 1977 संस्करण पृष्ठ 50; "कैथोलिक रिकॉर्ड" 1 सितम्बर 1923.

बाइबल में वर्णित ''पशु'' के सारे पहिचान चिन्ह पोपियत पर ही सही बैठते हैं और जैसा हमने अभी देखा है कि पोपियत कहती है कि उसके अधिकार का चिन्ह है – सब्बत के स्थान पर रविवार की स्थापना करना है. इस प्रकार रविवार पालन ''पशु की छाप'' पोपियत की छाप है. जब हम बाइबल की भविष्यवाणियों पर ध्यान करते हैं तो पढ़ते हैं कि पृथ्वी के इतिहास के अन्तिम दिनों में पशु की छाप का लगाया जाना एक बड़े संकट और परीक्षा का समय होगा. बाइबल कहती है कि जो लोग ''पशु की छाप'' को लेने से इंकार करेंगे उन्हें बेचने और खरीदने की मनाही होगी और अन्त में उन्हें जान से मार डाले जाने की राजाज्ञा निकाली जायेगी. इस सताव और संकट के अन्त में यीशु पुनः आकर अपने लोगों को छुटकारा देगा.

क्या हमें ''मरियम'' से प्रार्थना करना चाहिए ?

जैसा कि पहले ही बताया गया है, जब हम ''मरियम'' की बातों पर ध्यान देते हैं, तो यह भयभीत करने वाली बात है कि वह किस प्रकार से अपनी स्थिति को ऊँचा उठाती है और लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है. ''मरियम'' में सुरक्षा पाने और उससे प्रार्थना करने की बातों से प्रोत्साहित होकर बहुत लोग उससे प्रार्थना करने लगे हैं. वे कुंवारी ''मरियम'' की मूर्तियों को दण्डवत करके उससे अनुग्रह पाने के लिए प्रार्थना करते हैं. इसके अतिरिक्त वे उससे उसके पुत्र और पुत्र के पिता से उनके लिए मध्यस्थ की प्रार्थना करने के लिए भी निवेदन करते हैं. पोप जौन पॉल द्धितीय पर जान लेवा हमला होने के बाद पोप 2 मई 1982 को फातिमा गये और कुंवारी मरियम की मूरत के सामने दण्डवत करके उनका जीवन बचाने के लिए ''मरियम'' को धन्यवाद दिया.

यह दुःख की बात है कि संसार के धार्मिक नेता गण लोगों को ग़लत संकेत दे रहे हैं जो लोगों को सच्चाई से दूर लेकर जा रहे हैं. अब हम बाइबल में बतायी गयी दस आज्ञाओं में से दूसरी आज्ञा के एक भाग का उल्लेख करेंगे जिसे कैथोलिक चर्च ने अपने कैटाकिज़्म में से निकाल दिया है. यह एक ऐसा बड़ा धोखा है जिसे प्रोटेस्टेंट संसार ने स्वीकार कर लिया है. ''तू अपने लिए कोई मूर्ति खोद कर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में हैं, तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना'' निर्गमन 20:4–6. बाइबल की स्पष्ट चेतावनी के बावजूद भी पोप और दूसरे लोग जो पोप के मत के हैं वे ''मरियम'' की ओर मुड़कर ''मरियम'' की मूरत को दण्डवत करते हैं.

क्या ''मरियम'' हमारी सह-उद्धारकर्ता और मध्यस्थ हो सकती है ?

कैथोलिक कलीसिया ने एक बड़ा आन्दोलन चलाया हुआ है जिसके तहत वे कैथोलिक चर्च के भीतर एक सिद्धान्त को बढ़ावा दे रहे हैं कि मरियम को सह–उद्धारकर्ता (Co-redemptrix) और सारे अनुग्रह का मध्यस्थ (Mediatrix) और परमेश्वर के लोगों की मुख्त्यार के रूप में घोषणा की जाये. इस बात से हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि कैथोलिक चर्च में ''मरियम'' को यीशु की समान्ता और बराबर में लाने के लिए एक बड़ा आन्दोलन चलाया जा रहा है. बाइबल के अनुसार स्वर्ग में साक्षी देने वाले तीन हैं – ''पिता, वचन (मसीह) और पवित्र आत्मा'' 1 यूहन्ना 5:7. यदि हमने इस नयी शिक्षा को स्वीकार कर लिया जिस में ''मरियम'' को सह उद्धारकर्ता और मध्यस्थ बताया जा रहा है तो स्वर्ग में साक्षी देने वालों की संख्या तीन से चार हो जायेगी, अर्थात पिता, माता और पुत्र और पवित्र आत्मा. जब कैथोलिक लोग ''मरियम'' को सह उद्धारकर्ता और मध्यस्थ का पद प्रदान करेंगे कि वह हमारी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के समक्ष पहुँचाए और हमारी आढ़ और मध्यस्थ बने तो यह बहुत बड़ा धोखा होगा, क्योंकि यीशु का स्थान लेना एक बड़ा साहस भरा धोखा होगा. यीशु ने स्वयं इस प्रकार के किसी भी विचार का इन्कार करते हुए कहा है, ''मार्ग और सच्चाई, और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्धारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'', यूहन्ना 14:6. हमें यह भी बताया गया है कि यीशु ऐसा क्यों कहता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु ने अपनी मृत्यु के द्धारा परमेश्वर के सिहांसन तक पहुँचने का मार्ग खोल दिया है. पाप मनुष्य को परमेश्वर से दूर ले जाता है, और जब मनुष्य ने पाप किया तो उस पर मृत्यु के दण्ड की आज्ञा हो गई थी. क्योंकि ''पाप की मजदूरी मृत्यु है'' रोमियों 6:23. परन्तु परमेश्वर ने पाप के दण्ड से मनुष्य को बचाने के लिए एक द्धार खोल दिया है, '' क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये''. यूहन्ना 3:16. यदि हम यीशु को अपने जीवन का स्वामी स्वीकार करलें तो वह अपने बलिदान के कारण हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेगा. इसलिए 1 तीमुथियुस 2:5 में बाइबल कहती है, '' क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अथार्त यीशु जो मनुष्य है'', इस प्रकार यीशु मसीह जो परमेश्वर और मनुष्य के मध्य एक मात्र बिचवई है परमेश्वर के सिंहासन तक आने के लिए एक मात्र माध्यम है. इब्रानियों 8 और 9 अध्याय और यूहन्ना 3:17.

क्या ''मरियम'' पोप या प्रीस्ट लोग हमारे पापों को क्षमा कर सकते हैं ?

''मरियम'' के स्तर को ऊँचा उठाकर यीशु के बराबर लाने का प्रयास करने वाली कैथोलिक कलीसिया यह भी सिखाती है कि पोप और प्रीस्ट लोगों के पापों को क्षमा कर सकते हैं. कुछ पपित प्रोटैस्टेन्ट कलीसियाएं और दूसरे आन्दोलन जैसे फ्री मैसन्स में कोई भी व्यक्ति प्रीस्ट के पास जाकर अपने पाप स्वीकार कर सकता है. और पाप स्वीकार करने के बाद उसे बताया जाता है कि ''तुम्हारे पाप क्षमा हो गये हैं''. इस बात की परख करते समय महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या हमें ''मरियम'' पोप या प्रीस्ट जो सब पतित पापी मनुष्य मात्र हैं के पास जाना चाहिए या फिर यीशु मसीह के पास जाकर अपने पापों से क्षमा प्राप्त करना चाहिए? बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि कि जब कोई पाप करता है तो जो लोग इसमें शामिल हैं अर्थात अपराधी जिसने पाप किया है और मुदई जिसके विरूद्ध पाप किया गया है दोनों को आपस में मसले को सुलझा लेना चाहिए. बाइबल कहती है ''सचेत रहो, यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर''. लूका17:3–4. इस सम्बंध में पोप या प्रीस्ट की कोई भूमिका नहीं होती. जब सम्बंधित व्यक्ति से क्षमा प्राप्त हो जाती है तो यह आवश्यक है कि अन्तिम क्षमा प्राप्त करने लिए प्रार्थना में परमेश्वर के समक्ष जाया जाये. यीशु ने हमें स्वर्गीय पिता से इस प्रकार प्रार्थना करना सिखाया है. '' जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर दे,'' मत्ती 6:12. और यूहन्ना इसे इस प्रकार कहता है, ''हे मेरे बालको मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो, और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात धार्मिक यीशु मसीह''. 1 यूहन्ना 2:1. केवल यीशु मसीह के द्धारा ही कोई पापी अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के समक्ष आ सकता है. केवल यीशु मसीह ही हमारा उद्धारकर्ता, हमारा मध्यस्थ और हमारा वकील है. अपने पापों की क्षमा के लिए हमें केवल उसी के पास जाना चाहिए. जब हम अपने पापों को मान लेते हैं अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और प्रभु से क्षमा पाने के लिए उसकी ओर मुड़ते हैं, तो हम इस प्रतिज्ञा के भागीदार होते हैं, ''यदि हम अपने पापें को मानलें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है. 1 यूहन्ना 1:9.

आत्मावाद - पूरे संसार को एकमत करने के प्रयास की चाबी

आइये हम पुनः ''मरियम का प्रेत'' या आत्माओं के प्रकटीकरण पर चलें. आत्मावाद अन्त समय में सभी धर्मों के लोगों को एकमत करने के प्रयास में एक महत्वपूर्ण चाबी है. बाइबल इस विषय में बताते हुए कहती है, ''और मैंने उस अजगर (शैतान/आत्मावाद) के मुहं से, और उस पशु (कैथोलिक चर्च)के मुह से, और उस झूठे भविष्यद्धकता (पतित प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं) के मुहं से तीन अशुद्ध आत्माओं को निकलते देखा, "ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्ट आत्माएं हैं जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल कर इसलिए जाती हैं कि उन्हें सर्व शक्तिमान के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिए इकट्ठा करें." प्रकाशितवाक्य 16:13–14.

आज हम देख सकते हैं कि इस भविष्यवाणी के पूरे होने के लिए किस प्रकार मार्ग तैयार हो रहा है, संसार के राष्ट्र अपनी राजनीतिक, आर्थिक सैनिक और धार्मिक बातों के साथ एकीकृत हो रहें हैं. और आज आत्मावाद के रूप में विशेषतयः धार्मिक विषयों में एकता हासिल करने के लिए शैतान के हाथ में एक महत्वपूर्ण चाबी आ गई है. बाइबल बताती है कि संसार की सभी दुष्ट शक्तियाँ एकता के बंधन में बंध जायेंगी. बाइबल कहती है कि सब "एक मन के होंगे और अपनी अपनी शक्ति और सामर्थ 'पशु' को दे देंगे." यह स्पष्ट है कि पोपियत इस संघर्ष में नेतृत्व करने वाली शक्ति होगी. जी हाँ बाइबल कहती है कि उस पशु (पोपियत) के पीछे सारा संसार आश्चर्य करता हुआ चलेगा. प्रकाशितवाक्य 13:3. बाइबल

स्पष्टता से कहती है कि ये ही शक्तियां मिलकर मेम्ने और जो उसके पीछे चलते हैं उनसे युद्ध करेंगी. प्रकाशित वाक्य 17:13–17. इस संसार की शक्तियां स्वयं को बाइबल से ऊपर रखते हुए आज्ञा पालन की मांग करती हैं. किन्तु बाइबल कहती है, '' इसलिए तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी श्वांस उसके नथुनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या''. "और शापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता है और उसका सहारा लेता है जिसका मन यहोवा से भटक जाता है.'' यशायाह 2:22, यिर्मयाह 17:5

अब तक जो कुछ हम ने परखा है इससे यह स्पष्ट है कि ''मरियम'' संसार के सभी धर्मों के लोगों को रोम के छाते के नीचे एकत्र करने के प्रयास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी. पोप ने भी सभी धर्मों की एकता की इच्छा प्रकट की है.''वर्ष 2001 एक महान जुबली के रूप में याद किया जायेगा, जिसमें समस्त मसीहियों के मध्य एकता की इच्छा पूरी होगी, जब तक वे सम्पूर्ण समाज की एकता के लक्ष्य को प्राप्त न करलें. "द थर्ड मिलेनियम" पृष्ठ 26–31.

सच्ची एकता कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

सच्ची एकता कैथोलिक चर्च के विश्वासों, ''मरियम के प्रेत'' या "चर्च एकता योजना" के द्वारा प्राप्त नहीं की सकती है. सच्ची एकता तब आती है जब हम यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं और उसकी शिक्षा के अनुसार अपने पापों से क्षमा प्राप्त करते हैं. यीशु मसीह कहता है, ''मैं प्रार्थना करता हूँ'' कि वे सब एक हों जैसे तू हे पिता मुझमें है और मैं तुझमें हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों ...'' यूहन्ना 17:20–23. जब हम यीशु को स्वीकार करते और पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में सक्रिय हो जाता है, तभी सच्ची एकता की नींव रखी जाती है. फिर हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए आवश्यक सामर्थ प्राप्त करते हैं और हमारा जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता है. हमारे जीवन से परमेश्वर का चरित्र प्रकट होता है. ऐसा इसलिए नहीं होता कि हम भले हैं किन्तु इसलिए कि पवित्र आत्मा हमारे प्रति दिन के जीवन में अपने वचन और कर्म दोनों ही के माध्यम से सही निर्णय लेने की क्षमता और समझ प्रदान करता है. यूहन्ना 14:4–5, 2 पतरस 1:4, 1 यूहन्ना 1:9. बाइबल एक छोटे विश्वासी समूह (रैम्नैन्ट) बकिया कलीसिया या "शेष सन्तान" के विषय बताती है, जो अन्तिम समय तक विश्वास योग्य पाये जायेंगे. ये वे हैं जो ''परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं.'' प्रकाशितवाक्य 14:12, 1 कुरिन्थियों 10:13, फिलिप्पियों 4:13, यूहन्ना 17:3, जब हम ने अपने पापों को मान कर यीशु से उद्धार और क्षमा प्राप्त कर ली है फिर हम जानते हैं कि अन्त तक विश्वासयोग्य बनें रहकर यीशु के पीछे चलने के लिए हमें आवश्यक सामर्थ भी प्राप्त हो सकती है. कुछ लोग मसीह के आने तक बने रहने का अनुग्रह भी प्राप्त करेंगे–प्रकाशितवाक्य 14:12, 1 कुरिन्थियों 10:13, फिलिप्पियों 4:13, यूहन्ना 17:3. यीशु के साथ उनका क्या ही महिमा मय अनुभव होगा! मेरी प्रार्थना है कि हम सब मसीह के पक्ष में अन्त तक स्थिर खड़े रहने का प्रयास करेंगे.

हम क्या कर सकते हैं ?

आप में से जितनों ने यीशु के पीछे चलने का अभी फैसला नहीं किया है, मैं निवेदन करता हूँ कि आप अपनी बाइबल उठा कर पढ़ें. अपने बाइबल अध्ययन पर परमेश्वर की आशीष मांगें और उदाहरण के लिए यूहन्ना जो यीशु का सबसे प्रिय चेला था, उसके सब पत्र पढ़ें. और आप जगत के उद्धारकर्ता को पा जायेंगे. ''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें.'' यूहन्ना 17:3.

जगत का उद्धारकर्ता यीशु मसीह अति शीघ्र आ रहा है. पाप से पीड़ित संसार के लिए क्या ही धन्य आशा है, और अद्भुत भविष्य की क्या ही धन्य प्रतिज्ञा भी! मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं यीशु को अभी बेहतर रूप से जानने के इच्छुक होंगे, ताकि जब वह अपने बालकों को लेने आये तो हम भी उसके साथ स्वर्ग पर उठाये जा सकें. आशा है आप से वहाँ मुलाक़ात अवश्य होगी.

शुभकामनाओं के साथ
धन्य आशा में आपके
बेन्टे और ऐबल स्ट्रउक्सनेस
नॉर्वे

हिन्दी रूपांतरण : बरकत मैसी –
अधिक जानकारी के लिए
सम्पर्क करें : 24–ए, प्रेम नगर कॉलोनी,
नारियल खेड़ा, भोपाल–462038
ई–मेल : heraldofadvent@yahoo.com
मोबाइल : 9827 266186, 09993 304778

If you would like to help out distributing this or other pamphlets, or download some of them, click here!

The following pamphlets are available in english, and are mailed to your upon request free of charge-please contact us.

* The Struggle Behind the Scenes
* The Elite Tightens the Grip
* Watch out for the Power Elite and the Global Union!
* Watch out for the Ecumenical Movement!
* Liberty in Danger!
* Israel in the End of Time
* The Marian Apparitions
* Charta Oecumenica
* 666, the Beast, the Marks of the Beast
* The Path of Health